ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -14 अंक - 8 जुलाई -II, 2013 (पाक्षिक) माउण्ट आबू मूल्य 7.50 रु.

अहिंसा से होगी विश्व में शान्ति :शिवराज पाटिल

अहिंसा परमोधर्म पर राष्ट्रीय महासम्मेलन का आयोजन

कुरूक्षेत्र। अहिंसा परमोधर्म पर राष्ट्रीय महासम्मेलन का दीप प्रज्जवलन द्वारा शुभारंभ करते हुए पंजाब के राज्यपाल शिवराज पाटिल, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. बृजमोहन, हरियाणा हाई-कोर्ट के न्यायाधीश चौधरी नवाब सिंह, आंध प्रदेश के पूर्व न्यायाधीश ईश्वरैया, गीतापीठ शाश्वत सेवा ट्रस्ट के संस्थापक महामण्डलेश्वर डा. शाश्वतानंद गिरी, महामण्डलेश्वर स्वामी सर्वानंद सरस्वती, महाशक्ति पीठ दिल्ली। ब्र.कु. उषा,; कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के वाईस चान्सलर डी.एस.एस संधू तथा अन्य।

कुरूक्षेत्र। पंजाब के राज्यपाल शिवराज पाटिल ने कहा कि श्रीमद भगवत गीता अहिंसा का संदेश देती है। अहिंसा का पैगाम देकर विश्व में शान्ति स्थापित की जा सकती है। मन में प्रेम की भावना पैदा करके ही आतंकवाद खत्म किया जा सकता है और शान्ति स्थापित की जा सकती है।

पंजाब के राज्यपाल शिवराज पाटिल महासम्मेलन में आज बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। इससे पूर्व उन्होंने कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के सभागार में दीप प्रजवल्लित करके **अहिंसा परमोधर्म एवं श्रीमद भगवत गीता** विषय पर दो-दिवसीय राष्ट्रीय महासम्मेलन का शुभारम्भ किया। यह महासम्मेलन ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के तत्वाधाान में आयोजित किया गया।

उन्होंने विश्व में शान्ति स्थापन करने के लिए ब्रह्माकुमारी संस्था के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि विचारों में हिंसा होती है। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता के द्वारा ही समाज में बढ़ती हुई आंतरिक विकारों से उत्पन्न हिंसा को दूर किया जा सकता है। हिंसा के कई रूप हैं। मन के विचारों, वाणी एवं कर्म से हिंसा की जा रही है। आतंकवाद बढ़ रहे हैं और युद्ध घट रहे हैं लेकिन फिर भी चारो ओर अशान्ति का माहौल है।

इस महासम्मेलन में आध्यात्मिक नेता, साधु, संत, शिक्षाविद, न्यायविद सहित देश व प्रदेश भर से हजारों लोगों ने भाग लिया। वर्तमान समय में बच्चों, महिलाओं, वृद्धों सहित पिछड़े वर्ग के लोगों के खिलाफ बढ़ती जा रही हिंसक घटनाओं के विषय में सम्मेलन में सभी वक्ताओं ने अपने विचार रखे और इन समस्याओं का समाधान खोजने की दिशा में प्रयास किए। सभी ने एक सुर में कहा कि श्रीमद भगवत गीता में अहिंसा का संदेश दिया गया है। इन हिंसक घटनाओं पर पूर्ण रूप से विराम लगाने के लिए श्रीमद भगवत गीता को जीवन में अपनाना होगा। विशिष्ट अतिथि एवं पंजाब व हरियाणा हाई-कोर्ट के जस्टिस चौधरी नवाब सिंह ने अपने संबोधन में लोगों से परमपिता परमात्मा द्वारा बताए मार्ग पर चलने हेतु अपने जीवन में व विचारों में अहिंसा को अपनाने का आह्वान किया।

ब्रह्माकुमारीज के प्रवक्ता एवं राजयोगी बी.के. ब्रीजमोहन ने कहा कि शास्त्रों के अनुसार जहां नारी का सम्मान होता है वहां देवताओं का वास होता है। बड़े खेद का विषय है कि विश्व भर में नारी सहित विभिन्न अपेक्षित वर्गों के खिलाफ हिंसा ने विकराल रूप धारण कर लिया है। संस्था द्वारा देश व विदेश में अहिंसा परमोधर्म का संदेश देने का अभियान चलाया गया है। इसके तहत कुरूक्षेत्र में इस सम्मेलन का आयोजन किया गया है। उन्होंने सभी से हिंसा जैसे घृणित कार्य पर अंकुश के उपाय खोजने का आह्वान किया। पांच विकार ही हिंसा का मुख्य कारण है। आध्यात्मिकता को जीवन में अपनाने से ही इस पर अंकुश संभव है।

आंध्र प्रदेश हाईकोर्ट के पूर्व चीफ जस्टिस ईश्वरैया ने अपने संबोधन में कहा कि सर्व शिरोमणी ग्रंथ गीता में अज्ञान अंधकार दूर करने की विधि बताई गई है। इसमें अहिंसा परमोधर्म का संदेश दिया गया है जो विश्व भर में एक मिसाल है। परमपिता परमात्मा कभी भी हिंसा को बढ़ावा देने की बात नहीं कह सकते। हिंसा से हिंसा को कभी खत्म नहीं किया जा सकता बल्कि अहिंसा से ही शान्ति का राज्य स्थापित किया जा सकता है।

श्री गीतापीठ शाश्वत सेवा आश्रम ट्रस्ट

-शेष पेज 4 पर.

आपसी सद्भाव का आधार आध्यात्मिकता :मुमताज मसीह

ज्ञानसरोवर। दादी जानकी संबोधित करते हुए, मुमताज मसीह,समाज सेविका एस. वाणी देवी ब्र.कु. संतोष ,ब्र.कु.अमीरचंद।

ज्ञानसरोवर। सामाजिक कुरीतियों को समाप्त कर आपसी सद्भाव बढ़ाने के लिए अध्यात्म की आवश्यकता है। कोई भी व्यक्ति आपकी भौतिक आवश्यकताएं पूरी कर सकता है लेकिन पूर्ति करनी है आध्यात्मिक आवश्यकताओं की।

उक्त विचार राजस्थान जन असंतोष निवारण समिति के अध्यक्ष मुमताज मसीह ने ब्रह्माकुमारी संस्था के समाज सेवा प्रभाग द्वारा 'आध्यात्मिकता द्वारा वृत्ति एवं समाज परिवर्तन' विषय पर आयोजित सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होने कहा कि हमारी संस्कृति है हमारी पारिवारिक एक जुटता। परिवार के मुखिया की बात सब मानते थे वह अनुभवी माने जाते थे। अपने से बड़ों का सम्मान था। अब वह नहीं रहा। धार्मिक शिक्षाओं को आचरण में लाने की आवश्यकता है। शंकराचार्य ने बताया कि ईश्वर एक है। ऊंच नीच का भेदभाव गलत है। हमारे पूर्वजों ने हमें ऐसा सिखाया। यही शिक्षाएं आज भी हमारा पथप्रदर्शन कर रही हैं। धर्म बीच में आकर बाधक बन गया है। इसलिए आज आध्यात्मिकता ही एकमात्र समाधान है।

ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने कहा कि परमात्मा शक्ति से शांत रह सकते हैं। दिल सबकी एक जैसी है चाहे धर्म कोई भी हो। जीवन में सत्यता चाहिए। प्रेम है तो सब है। भगवान को सच्चे बच्चे अति प्रिय हैं। भगवान के गुण गाने नहीं हैं बल्कि धारण करने हैं। इच्छा अर्थात ये भी मुझे मिले, यह भी मुझे चाहिए और ममता माना मेरे पास जो है वह कोई छीन ना ले। अंधों

-शेष पेज 4 पर.